विहाग वैभव की पाँच कविताएं

(1)

बहुत मामूली सी चीजें चाही थी उन्होंने

मेरे पुरखों ने एक छत चाही थी
धूप, सर्द और बारिश से जो छुपा सके सिर
बच्चे जब थरथराते थे ठंड से
तो पिता की आत्मा कटे पतंग सी काँपती हुई गिरने लगती थी पीड़ा के महासागर में

खेत का इतना भर टुकड़ा चाहते थे वे
कि मुट्ठीभर भूख की मक़तलनुमा हवेली पर बँधुआ हुए बगैर
परिवार को ज़िंदा रखा जा सके
और न्यूनमत आत्माभिमान का सौदाकर लाये गए अन्न से
बच्चों की क्रूरतम मृत्यु को स्थगित किया जा सके

जबकि वे जानते थे मनुष्य के नंगेपन के आगे देह का नंगापन कुछ भी नहीं, फिर भी
बच्चों का, बीवी का तन ढँक जाए
कि सभ्यताएँ बची रह जाएँ नंगी होने से
इतना भर वस्त्र चाहा था मेरे पुरखों ने

कुछेक थे जिसने इन सबसे उबरकर एक देस चाहा था
कोड़ों से क़त्ल हुए बगैर जिसे वे अपना कह सकें

पर धर्म की आग पर पके अजन्मी पीढ़ियों के गर्भ-शिशु खाये शराबी की उल्टियों की तरह
तुम्हारी सभ्यता सदियों दूर से गंधाती है मुझे

मैं देखता हूँ कि वहाँ, अय्यास इतिहास के कोटरों में
अकूत अनाज सड़कर बजबजा रहा है

सड़ी सभ्यता के संग्रहालय में रखी वह जड़ीदार शेरवानी
मेरे पुरखों की हड्डियों से बनायी गयी हैं

एक भूख सदियों से मेरा पीछा करती है
एक आदिम कराह सीने में सारंगी की तरह बजती रहती है
तुम ध्यान से देखोगे तो
तुम्हें मेरी पीठ पर कोड़ों के हजार निशान मिलेंगे
माँ कहती है जन्मजात हैं ये निशान

भूख भर अन्न
धूप भर छत
प्यास भर पानी
बहुत मामूली सी चीजें चाही थी मेरे पुरखों ने
पर घृणा के मवाद का खाद पाकर लहलहाती हुई तुम्हारी सभ्यता ने उन्हें
भूख में डुबोकर मारा
पानी से बाँधकर मारा
इतिहास की छत बनवाई और छत में चुनवाकर मारा।

(2)

सभ्यता की अदालत में तटस्थता एक अपराध है

यदि आप हत्यारे के विरोध में होना नहीं चुनते
तो हत्यारे आपको अपना समर्थक मान लेते हैं

यदि आप भूखे का साथ नहीं देते
तो आप अय्यास सम्पन्नता के साथ हो जाते हैं

यदि आप मनुष्य होने के लिए नहीं होते लालायित
तो अमानुषों की सेना आपको गिन लेती है अपने में

यदि आप प्रेम को नहीं चुनते
तो घृणा आपको चुन लेती है

सभ्यता की अदालत में तटस्थता एक अपराध है

यदि आप नहीं खड़े होते स्वतंत्रता, समानता, न्याय और प्रेम के पक्ष में
तो तमाम मृत तर्कों के बावजूद
आप इनके विरोधियों में हो चुके होते हैं शामिल।

(3)

मानवद्रोहियों की जैविक संरचना के संदर्भ में

वे वीर्य से नहीं , घृणा से उपजे थे

वे मनुष्य योनि में हुए
और मनुष्यता के मवाद की तरह जीते रहे

मनुष्य को मनुष्य से अलगाते रहे
मनुष्य को मनुष्य का माँस परोसते रहे
और मनुष्यता की आत्मा चबाते रहे
ऐसा करते हुए वे पुराने करैत की तरह मुस्काते रहे

वे धार्मिक-ग्रंथों से निकले और ख़तरनाक जीवाणुओं की तरह
सभ्यता के भूगोल पर इस छोर से उस छोर तक फैल गए
इतिहास में पसर गए द्वेष के अजगर की तरह
हवा में ज़हर की तरह समा गए
पानी पर बैठ गए कुण्डली मारकर
उन्होनें कलम बनाई और उससे विधर्मियों का क़त्ल करने का काम लिया

गर आग हाथ लगी तो सबसे पहले उन्होंने दूसरों के घर घर जलाए
कपास हाथ लगा तो दुनिया का गला घोंट सकने लायक फंदा बनाया

वे मनुष्य की सबसे सुंदर चीजों का सबसे अश्लील इस्तेमाल करते रहे

वे पहाड़ पर गए तो पहाड़ों के गर्भ में बम छोड़ आये
वे नदी को छुए तो नदियाँ सूखती चली गईं
वे जंगलों में गए तो जंगल में आग लग गयी
उनका लालच इतना विशाल था कि
उसमें पूरा का पूरा ग्रह शक्कर के एक दाने सा समा सकता था

वे अभियंता हुए तो काली चमड़ियों वालों के मनुष्य की हड्डियों से पुल बनाते रहे
वे डॉक्टर हुए तो मनुष्य की सबसे तेज मृत्यु कर सकने वाली दवा तलाशते रहे
वे प्रोफ़ेसर हुए तो भाषणों से निर्लज्ज इतिहास का बदन ढँकते रहे
वे कवि हुए तो भाषा से सत्ता की नाक पोंछते रहे
वे ऋषि या साधु हुए तो देखते ही देखते बलात्कारी में बदल गए
वे मंत्री हुए तो पूरी बेहयाई से हत्यारे हो गए
वे सदी के दुर्दांत हत्यारे हुए तो प्रधानमंत्री हो गए

वे वह सब कुछ हो गए जो मानव देह के लिए विभत्स
और सभ्यता के लिए विनाश का कारण हो सकता था

वे आततायी स्वप्नयात्री थे
मेरे सपने में वे तैतीस करोड़ मुँह वाले अजगर की शक्ल में आते रहते हैं

वे आखिरी जन्म जितने नए हैं
वे पहली मृत्यु जितने पुराने हैं

वे मनुष्य योनि में हुए और मनुष्यता के मवाद की तरह जीते रहे
इसके अलावा मनुष्यों और उनमें एक ही जैविक अंतर था

मनुष्य, स्त्री और पुरुष के प्रेम-संसर्ग से उपजा था
और वे
सात समंदर जितने बिच्छुओं के डंक को निचोकर इकठ्ठा हुए
घृणा और विष-द्वेष से पैदा हुए थे।

(4)

हमारे चेहरों पर चीखों के धब्बे हैं

पिछली चौबीस रातों से मेरे स्वप्न में आने वाला
नालंदा के राजगीर पहाड़ी पर बलत्कृत स्त्री के यौनांग से रिसता खून
और छह पुरुषों के लिंग से बहता सभ्यता का वीर्य
मेरे मष्तिष्क में मवाद की तरह जम रहा है

इतिहास हत्यारों के दलाल की तरह सच छुपाने का आदी है
वह कभी नहीं कहेगा कि आशीर्वाद से और खीर खाकर गर्भवती हुईं स्त्रियाँ
वस्तुतः उन गलीज़ आत्माओं वाले महात्माओं और ऋषिओं द्वारा बलत्कृत औरतें हैं

त्रिशूलधारी त्रिपुंडमण्डित रक्तखोर इतिहास से मुझे उम्मीद भी नहीं
वह तो सदियों से नालंदा के राजगीर पर्वत पर बह रहे छः पुरुषों का वीर्य पोछने में लगा हुआ है

तो क्या राजगीर के पत्थरों पर एक बलत्कृत स्त्री और उसके असहाय प्रेमी को छोड़कर हम चाँद पर चढ़ जाएं ?
फिर इतिहास हमें हत्यारों का दलाल कहेगा !
अरे भाड़ में जाए इतिहास
भाड़ में जायें हत्यारे
और भाड़ में जाएँ उसके दलाल

सवाल एक बलत्कृत स्त्री और क्षत-विक्षत हुई सभ्यता का है
सवाल ये है कि

इसे लेकर हम किस अस्तपताल में जा सकते हैं
किस रसायन से धुल सकता है हमारे सूख चुके रक्त की शक्ल का पत्थरों पर पड़ा यह सदियों पुराना दाग
किस भाषा में, दुनिया की किस अदालत में दायर किया जा सकता है ये मुकदमा ?

अब समय आ गया है कि
सृष्टि के सभी प्राणियों , जंगलों , पर्वतों और नदियों की सामूहिक पंचायत से यह तय कर लिया जाए कि
इस दुनिया में पुरुष रहेगा कि मनुष्य

मैं चौबीस दिनों से सुन रहा हूँ कि वह लड़की
मुझे कातर आवाज लगाए जा रही है
इतिहास के चंगुलों में फँसा उसका प्रेमी
मुझे मेरे मनुष्य होने का वास्ता दे रहा है

स्वप्न और स्वप्न से बाहर
ये आवाजें दिन-रात मेरा पीछा करती हैं

इन दिनों मेरा बदन
क्रोध , हताशा , चिंता और शर्म से अक्सर थरथराने लगता है
और बारहा मैं महसूस करता हूँ कि ये आवाजें
सिर्फ चौबीस दिन से नहीं
बल्कि सदियों से मेरा पीछा कर रही हैं।

(5)

वे सारे मेरे अपने हैं

जो सभ्यता के इतिहास में अवर्णित रहे
जिनका होना, न होने से बिल्कुल भी अलग नहीं रहा

जो हवा और पानी की तरह चुपचाप अपने काम पर गए

और वापस लौटकर गुम हो गए ब्रह्माण्ड के किसी कोने में
जिनका उल्लेख भाषा में कहीं भी नहीं पाया जा सकता

इतिहास जिनके नामों के पीठ पर लदकर हम तक आता है
वे उनके सिपाही हुए
हरक्यूलिसों और अशोकों की निर्मम महानता के लिए
उनकी हवस के लिए
लड़े और बेनाम दफ़्न हो गए युद्धभूमि की कोख में
वे सारे मेरे अपने हैं
जिनकी मृत्यु का मुआवजा अदद दो आँसू की मेहरबानी के लिए तरसता रहा

इतिहास जिन्हें विराट शौर्यजीवी योद्धा कहता है
उनकी जमीन की तरफ देखिये
वे मेरे पुरखों की लाशों की ढेर पर खड़े हैं

साफ और सम्मानजनक प्यास को घाव भरे पीठ पर लादकर वे जीवन भर भटकते रहे
बैलों की तरह जुतते रहे बैलों के साथ
और बैलों से कम मजूरी मिली जिन्हें
बैलों के गोबरों से जिन्होंने रोटियाँ बनायीं

जो ताजमहल बनाए और क़त्ल हो गए
जो भूख भरी थाली को बगल खिसका
किसी पुरवासी का छप्पर उठाने के लिए दौड़ गए बेशर्त
वे सभ्यता की सड़ चुकी लाश को कंधे पर लाद गाथाओं की मुर्दहिया तक पहुँचाते रहे

वे सारे मेरे अपने हैं

वे ज्यादातर श्यामवर्णी मेहनतकश बलिष्ठ हुए
इतिहास ने उन्हें राक्षस कहा और वध किया
पहाड़ की मानिन्द जीवट और रुई की तरह मुलायम

पूँजी के अभाव में सीने में पल रहे मृत्यु को छिपा ले गए
और पीढ़ी की पहली स्कूल जाती बेटी की लाल चोटी पर फिदा होकर बिफर पड़े

वे किसी की महानताओं के लिए झंडा उठाते रहे
सभा में झाड़ू लगाते रहे
पुल के लिए लोहा काटते रहे
सड़क के लिए गिट्टी तोड़ते रहे
पानी के लिए जमीन खोदते रहे

वे किसी भी वर्णन के आदि-आदि हुए

सभ्यताएं जिनके पसीने को सोखकर हरी होती रहीं
महानताएँ जिनके रक्त से ऐश्वर्य पाती रहीं
गाथाएँ जिन्हें राक्षस कहती रहीं
वे सारे के सारे मेरे अपने हैं।

(**परिचय :** हिंदी के प्रतिष्ठित सम्मान 'भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार' से सम्मानित युवा कवि विहाग वैभव वर्तमान में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिंदी विभाग में शोधरत हैं। संपर्क : 8858356891)